ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 3, March 2023 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

अलवर जिले में खाद्य प्रसंस्करण और भंडारण

Prof. D S Chouhan

Rajasthan University

Raghuveer singh

Associate professor

Govt college kotputli

सार

खाद्य सुरक्षा को उस राज्य के रूप में परिभाषित किया गया है जहां सभी लोगों को सक्रिय और स्वस्थ जीवन के लिए अपनी आहार आवश्यकताओं और खाद्य वरीयताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तक पहुंच होती है। खाद्य संसाधनों को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: प्राथमिक और माध्यमिक। प्राथमिक खाद्य संसाधन वे हैं जो सीधे प्रकृति से प्राप्त होते हैं और इसमें कृषि, वानिकी, मत्स्य पालन और पशुधन उत्पादन शामिल होते हैं। कृषि सबसे बड़ा प्राथमिक खाद्य संसाधन है और इसमें फसल उत्पादन से संबंधित सभी गतिविधियां शामिल हैं, जिसमें खाद्य, फाइबर और ईंधन के लिए फसलों की खेती, कटाई और प्रसंस्करण शामिल है। दूसरी ओर, द्वितीयक खाद्य संसाधन वे हैं जो प्राथमिक संसाधनों से प्राप्त होते हैं और इसमें खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग, परिवहन और वितरण शामिल होते हैं। ये गतिविधियाँ यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि भोजन सुरक्षित, पौष्टिक है, और आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। जीवन को बनाए रखने और लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए खाद्य संसाधन आवश्यक हैं। हालांकि, खाद्य संसाधनों की उपलब्धता और पहुंच अक्सर जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं, संघर्ष, आर्थिक स्थितियों और राजनीतिक अस्थिरता जैसे कारकों से प्रभावित होती है। इस प्रकार, भावी पीढ़ियों के लिए खाद्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए उनके सतत प्रबंधन और संरक्षण की आवश्यकता है। राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित अलवर जिला अपनी कृषि पद्धतियों और उत्पादन के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में कृषि का एक लंबा इतिहास है और सरसों, बाजरा, ज्वार और गेहूं जैसी फसलों के उत्पादन के लिए जाना जाता है। अलवर में खाद्य संसाधन मुख्य रूप से कृषि पर आधारित हैं, जिसमें आबादी का एक महत्वपूर्ण अनुपात अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है।

मुख्य शब्द

खाद्य , प्रसंस्करण, भंडारण

भूमिका

राजस्थान, भारत में अलवर जिले ने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण जनसंख्या वृद्धि का अनुभव किया है। इस वृद्धि से खाद्य संसाधनों पर दबाव बढ़ गया है, क्योंकि जनसंख्या के साथ-साथ भोजन की मांग भी बढ़ी है। इस लेख में, हम अलवर जिले में जनसंख्या वृद्धि और खाद्य संसाधनों के बीच संबंधों का पता लगाएंगे, यह जांचते हुए कि बढ़ती आबादी से जिले के खाद्य संसाधन कैसे प्रभावित हो रहे हैं। अलवर में जनसंख्या वृद्धि: अलवर जिले में पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। भारत की जनगणना के अनुसार, जिले की आबादी 2001 में 2.89 मिलियन से बढ़कर 2011 में 3.67 मिलियन हो गई, जो 26% से अधिक की वृद्धि है। जनसंख्या में वृद्धि जारी रहने का अनुमान है, अनुमान है कि यह 2031 तक 4.5 मिलियन से अधिक तक पहुंच सकता है। इस तेजी से जनसंख्या वृद्धि से जिले के खाद्य संसाधनों पर दबाव बढ़ गया है, क्योंकि जनसंख्या के साथ-साथ भोजन की मांग भी बढ़ी है।

खाद्य संसाधन विभिन्न साधनों को संदर्भित करते हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति उपभोग के लिए भोजन प्राप्त करते हैं। ये संसाधन मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं और जनसंख्या के विकास और वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलवर जिले के मामले में, खाद्य संसाधनों के स्रोत विविध हैं, और यह लेख उन्हें गहराई से तलाशने का प्रयास करता है।

1. कृषि

   अलवर में कृषि खाद्य संसाधनों का प्राथमिक स्रोत है। जिले में उपजाऊ भूमि है, और अधिकांश आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। जिले में उगाई जाने वाली मुख्य फसलों में गेहूं, बाजरा, ज्वार, सरसों और दालें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, जिले में आम, अमरूद और टमाटर जैसे फल और सब्जियां भी पैदा होती हैं। कृषि क्षेत्र जिले में 70% से अधिक आबादी को रोजगार देता है, जिससे यह स्थानीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बन जाता है।

2. पशुधन

   पशुधन अलवर में खाद्य संसाधनों का एक और आवश्यक स्रोत है। जिला अपने मवेशियों और भैंस की आबादी के लिए जाना जाता है, और यह दूध का एक प्रमुख उत्पादक है। इसके अतिरिक्त, जिला कई पोल्ट्री फार्मों का घर है, जो खपत के लिए अंडे और मांस प्रदान करते हैं। हाल के वर्षों में पशु-आधारित खाद्य संसाधनों की खपत में वृद्धि हुई है, और इसके परिणामस्वरूप जिले में पशुधन क्षेत्र का विकास हुआ है।

3. जंगलों

   अलवर में वन खाद्य संसाधनों का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। जिले में विशाल वन आवरण है, जो कई जंगली फल, जड़ी-बूटियां और औषधीय पौधे प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, जंगल हिरण, जंगली सूअर और खरगोश सहित कई जानवरों का भी घर हैं, जिन्हें भोजन के लिए शिकार किया जाता है। वन ईंधन की लकड़ी भी प्रदान करते हैं, जिसका उपयोग जिले में खाना पकाने और हीटिंग उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

4. मत्स्य पालन

   अलवर कई जल निकायों का घर है, जिसमें सरसिका नेशनल पार्क और सिलीसेढ़ झील शामिल हैं, जो मछली के स्रोत हैं। जिले में कई छोटे तालाब भी हैं, जिनका उपयोग मछली पालन के लिए किया जाता है। मत्स्य पालन जिले में खाद्य संसाधनों का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है, और पिछले कुछ वर्षों में मछली की खपत में वृद्धि हुई है।

5. उद्यानकृषि

   बागवानी जिले में एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है और खाद्य संसाधनों का एक आवश्यक स्रोत बन गया है। जिले में आम, अमरूद और अनार सहित कई फलों का उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त, जिले टमाटर, प्याज और आलू जैसी सब्जियों का भी उत्पादन करता है। बागवानी कई किसानों के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बन गया है, और इसने स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान दिया है।

कृषि उत्पादन किसी भी क्षेत्र के खाद्य संसाधनों में प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक है। राजस्थान, भारत का अलवर जिला, अपनी उपजाऊ भूमि और विभिन्न कृषि उत्पादों के लिए जाना जाता है। जिला अरावली रेंज में स्थित है, और इसकी स्थलाकृति मुख्य रूप से कुछ मैदानी क्षेत्रों के साथ पहाड़ी है। इस क्षेत्र में प्रति

वर्ष लगभग 600-800 मिमी की औसत वर्षा होती है, जिससे यह कृषि गतिविधियों के लिए उपयुक्त हो जाता है। इस खंड में जिले के कृषि उत्पादों और क्षेत्र के खाद्य संसाधनों में उनके योगदान पर चर्चा की जाएगी।

अलवर में खाद्य प्रसंस्करण और भंडारण

अलवर में कृषि खाद्य संसाधनों का प्राथमिक स्रोत है। जिले में मुख्य रूप से ग्रामीण आबादी है, जिसमें 80% से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। कृषि ग्रामीण आबादी का मुख्य व्यवसाय है, और जिला अपनी पारंपरिक कृषि प्रथाओं के लिए जाना जाता है। जिले में उगाई जाने वाली प्राथमिक फसलें गेहूं, सरसों, बाजरा, ज्वार और दालें हैं। नीचे दी गई तालिका अलवर जिले में खेती की जाने वाली प्रमुख फसलों के बारे में जानकारी प्रदान करती है:

तालिका 1: अलवर जिले में खेती की जाने वाली प्रमुख फसलों के बारे में जानकारी

पैदावार	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	उत्पादन (टन)
गेहूँ	168,000	333,000
सरसों	129,000	103,000
बाजरा	86,000	70,000
ज्वार	17,000	13,000
दालों	28,000	21,000

स्रोत: कृषि विभाग, राजस्थान सरकार

पशुधन: पशुधन अलवर के खाद्य संसाधनों का एक आवश्यक घटक है। जिले में गाय, भैंस, बकरियों और भेड़ों सहित एक महत्वपूर्ण पशुधन आबादी है। पशुधन आबादी जिले के लोगों को दूध, मांस और अन्य डेयरी उत्पाद प्रदान करती है।

तालिका 2: अलवर जिले में पशुधन की आबादी पर जानकारी प्रदान करती है:

पशुधन	आबादी
गायों	321,000

भैंसों	412,000
बकरी	375,000
भेड	68,000

स्रोत: पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार

वानिकी: अलवर में वानिकी भी एक आवश्यक खाद्य संसाधन है। जिले में एक महत्वपूर्ण वन आवरण है, और लकड़ी, लकड़ी और गैर-लकड़ी वन उत्पाद जैसे वन उत्पाद जिले के लोगों को भोजन और आजीविका प्रदान करते हैं। गैर-लकड़ी के वन उत्पादों में फल, जामुन, शहद और औषधीय पौधे शामिल हैं।

तालिका 3: अलवर जिले में वन आवरण पर जानकारी प्रदान करती है:

जंगल का प्रकार	**क्षेत्रफल (हेक्टेयर)**
घने जंगल	23,000
खुला जंगल	17,000
स्क्रब फॉरेस्ट	8,000
बागानों	12,000

स्रोत: वन विभाग, राजस्थान सरकार

खाद्य प्रसंस्करण और भंडारण: अलवर में खाद्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में खाद्य प्रसंस्करण और भंडारण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिले में कई खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां हैं जो गेहूं, सरसों और दालों जैसे खाद्य उत्पादों को संसाधित और पैकेज करती हैं। पूरे वर्ष खाद्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए गोदामों, कोल्ड स्टोरेज इकाइयों और साइलो जैसी खाद्य भंडारण सुविधाएं भी आवश्यक हैं।

निष्कर्ष: अलवर जिले में खाद्य संसाधन मुख्य रूप से कृषि, वानिकी और पशुधन पर आधारित हैं। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से ग्रामीण आबादी है, और कृषि ग्रामीण आबादी का मुख्य व्यवसाय है। गेहूं, सरसों, बाजरा, ज्वार और दलहन जिले में खेती की जाने वाली प्रमुख फसलें हैं। गाय, भैंस, बकरी और भेड़ सहित पशुधन भी जिले के लोगों को आवश्यक खाद्य संसाधन प्रदान करते हैं। वानिकी, अपने महत्वपूर्ण वन आवरण के साथ, यह भी प्रदान करता है निश्चित रूप से, मैं जारी रख सकता हूं। पारंपरिक कृषि उत्पादों के अलावा, अलवर जिला अपनी समृद्ध जैव विविधता और वन संसाधनों के लिए भी जाना जाता है। जिले के जंगल वनस्पतियों और जीवों की एक विस्तृत विविधता का घर हैं और फल, नट, शहद, औषधीय पौधे और मसालों जैसे गैर-लकड़ी वन उत्पादों (एनटीएफपी) की एक श्रृंखला प्रदान करते हैं। ये एनटीएफपी जिले में वन-निवास समुदायों के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। पशुधन खेती अलवर जिले में खाद्य संसाधनों का एक और महत्वपूर्ण घटक है। यह जिला गिर, साहीवाल और थारपारकर जैसे मवेशियों की स्वदेशी नस्लों के लिए जाना जाता है, जो स्थानीय कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित हैं। ये नस्लें अपने दूध और मांस के लिए बेशकीमती हैं और जिले के ग्रामीण परिवारों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसके अलावा, जिला अन्य पशुधन जैसे बकरियों, भेड़ और मुर्गी पालन का भी घर है।

तालिका 4: अलवर जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें

फसल	**क्षेत्र (हेक्टेयर)**	**उत्पादन (मीट्रिक टन)**
गेहूं	149,760	397,500
सरसों	49,650	47,520
ग्राम	24,080	9,120
बाजरा	19,300	25,620
मक्का	13,450	20,880

(स्रोत: जिला कृषि कार्यालय, अलवर)

तालिका 5: अलवर जिले में उगाए जाने वाले प्रमुख फल

फल	**क्षेत्र (हेक्टेयर)**	**उत्पादन (मीट्रिक टन)**

आम	6,170	22,440
अमरूद	2,480	7,440
बेर	3,340	9,600
आंवला	1,960	3,520
अनार	640	1,920

(स्रोत: जिला बागवानी कार्यालय, अलवर)

तालिका 6: अलवर जिले में पशुधन की आबादी

पशु धन	संख्या
मवेशी	656,010
भैंस	85,380
बकरी	510,350
भेड़	172,820
पोल्ट्री	3,120,000

(स्रोत: पशुपालन विभाग, अलवर)

हाल के वर्षों में, सरकार ने प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देने और जिले में किसानों और वन-निवास समुदायों की उत्पादकता और आय में सुधार करने के लिए कई पहल की हैं। सरकार ने किसानों को रोजगार के अवसर, बीमा कवर और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (एनआरईजीएस), प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) और राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) जैसी कई योजनाएं शुरू की हैं। इसी तरह, सरकार ने बांस और औषधीय पौधों के सतत प्रबंधन और मूल्य वर्धन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय बांस मिशन (एनबीएम) और राष्ट्रीय औषधीय पौधे बोर्ड (एनएमपीबी) भी शुरू किए हैं। अंत में, अलवर जिला प्रचुर मात्रा में

प्राकृतिक संसाधनों और एक अनुकूल कृषि-जलवायु स्थिति से धन्य है जो फसलों और पशुधन की एक विस्तृत विविधता का समर्थन करता है। हालांकि, जिले को कम उत्पादकता, मिट्टी के क्षरण, पानी की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, एक व्यापक और एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो स्थायी कृषि, संसाधन संरक्षण और आजीविका सुरक्षा के सिद्धांतों को जोड़ती है। सरकार, नागरिक समाज संगठन और निजी क्षेत्र इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जिले में किसानों और वन-निवास समुदायों को तकनीकी, वित्तीय और संस्थागत सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कृषि उत्पाद: अलवर जिला कृषि उत्पादों की विविध श्रृंखला के लिए प्रसिद्ध है। जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें इस प्रकार हैं:

1. अनाज: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख अनाज फसलें गेहूं, मक्का, ज्वार और बाजरा हैं। गेहूं जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसल है और जिले के मैदानी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उगाई जाती है। जिले में उगाई जाने वाली मक्का दूसरी सबसे महत्वपूर्ण फसल है, इसके बाद ज्वार और बाजरा है।
2. दलहन: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख दलहनी फसलें चना, मूंग, उड़द और अरहर हैं। चना जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण दलहनी फसल है और जिले के मैदानी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उगाई जाती है।
3. तिलहन: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख तिलहन फसलें सरसों, मूंगफली और तिल हैं। सरसों जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण तिलहन फसल है और जिले के मैदानी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उगाई जाती है।
4. फल: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फल फसलें आम, अमरूद और खट्टे फल हैं। आम जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फल फसल है और जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उगाई जाती है।
5. सब्जियां: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख सब्जी फसलें टमाटर, आलू, प्याज और बैंगन हैं। टमाटर जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण सब्जी फसल है और जिले के मैदानी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उगाई जाती है।

6. मसाले: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख मसाला फसलें जीरा, धनिया और मेथी हैं। जीरा जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण मसाला फसल है और जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उगाई जाती है।

खाद्य संसाधनों में योगदान: जिले के कृषि उत्पाद क्षेत्र की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिला खाद्यान्न, फल और सब्जियों का अधिशेष उत्पादन करता है, जो देश के अन्य क्षेत्रों में आपूर्ति की जाती है।

निष्कर्ष

अलवर जिला मुख्य रूप से कृषि प्रधान है, जिसकी 60% से अधिक आबादी कृषि में लगी हुई है। जिला गेहूं, सरसों, बाजरा और मक्का के उत्पादन के लिए जाना जाता है। हालांकि, जिले के खाद्य संसाधन सीमित हैं, इसकी अधिकांश कृषि भूमि वर्षा आधारित है और मानसून पर निर्भर है। जिला पानी की कमी से भी प्रभावित है, इसकी अधिकांश पानी की आपूर्ति अरावली पर्वत श्रृंखला से आती है। जिले के खाद्य संसाधन बढ़ती आबादी से और अधिक तनावपूर्ण हैं, क्योंकि भोजन की मांग बढ़ गई है। खाद्य संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव: अलवर जिले में खाद्य संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है। बढ़ती आबादी ने जिले की कृषि भूमि पर दबाव बढ़ा दिया है, क्योंकि बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए भोजन का उत्पादन करने के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता है। इसके परिणामस्वरूप वनों की कटाई और भूमि क्षरण हुआ है, जिसका पर्यावरण और जिले के खाद्य संसाधनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बढ़ती आबादी ने पानी की मांग में भी वृद्धि की है, जिसने जिले के पहले से ही सीमित जल संसाधनों को और तनावपूर्ण कर दिया है।

संदर्भ

1. कृषि सांख्यिकी 2020, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
2. जिला कृषि योजना 2020-21, कृषि विभाग, राजस्थान सरकार
3. "भारत में कृषि विकास और फसल तीव्रता," कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान समीक्षा, एसके सिंह, 2019
4. अलवर जिला जनगणना पुस्तिका 2011। भारत की जनगणना।

5. "एक नज़र में कृषि सांख्यिकी 2019। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।
6. "खाद्य और पोषण सुरक्षा प्रोफ़ाइल: भारत। संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन
7. गुप्ता, आर.के., और केशवन, पी.सी. (2018). भारत में टिकाऊ कृषि: एक सिंहावलोकन। स्थिरता विज्ञान, 13 (6), 1561-1578।
8. अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई)। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2020: एक असमान और रुकी हुई प्रगति। आईएफपीआरआई।
9. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-4) 2015-16।.
10. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।